एक सबक़ इस्लाम से

सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद क़ल्बे आबिद साहिब क़िब्ला ताबा सराह

पिछले शुमारे मई 2005 से आगे

ईश्वर की कल्पना बुराई से बचाती है

इंसान ग़रज़ का बन्दा (स्वार्थों का दास) है। अपनी भावनाओं और कामनाओं के आगे कोई रुकावट पसन्द नहीं करता। अपने मनोरथ की पूर्ति के लिए दूसरों के अधिकारों पर अतिक्रमण करता है। नैतिक रुकावटों को फाँद जाता है और सभ्यता और शिष्ठता के टुकड़े–टुकड़े कर देता है। इसको अपनी जगह पर रखने के लिए प्रत्येक देश और प्रत्येक काल में क़ानून बनाया गया और क़ानून पर चलाने के लिए किसी शक्ति का अस्तित्व आवश्यक समझा गया, जो क़ानून तोड़ने वालों के अत्याचार को रोक सके। परन्तु यह शक्ति हर जगह निगरानी नहीं कर सकती और इसकी निगाह से छुपके अपराध करना यही नहीं कि सम्भव है, बल्कि अपराधी अपराध करते ही रहते हैं और क़ानून के पकड़ से बचते भी रहते हैं। कुछ लोग तो अपने प्रभाव और शक्ति के कारण अपने को क़ानून से ऊँचा समझने लगते हैं। इस परिस्थिति के निवारण के लिए अनिवार्य है कि मन मस्तिष्क से उस सर्व शक्तिमान ईश्वर की कल्पना की जाए, जिससे छिपना किसी प्रकार सम्भव नहीं और जिसके सामने कोई भी व्यक्ति क़ानून से ऊँचा नहीं।

ईश्वर की कल्पना एक आदमी को दूसरे से निकट करती है।

एक को दूसरे के निकट लाने के लिए किसी सम्पर्क और सम्बन्ध की आवश्यकता है। वह सम्पर्क सूत्र जितना दृढ़ होगा निकटता भी उतनी ही अधिक होगी। वतन वालों से प्रेम, अपने सजातीय भाईयों से स्नेह, कुटुम्ब एक होने के कारण समीपता, यह सब वह नाते हैं जो एक को दूसरे से निकट करते हैं। परन्तु इनमें से कोई भी सम्पर्क इतना दृढ़ नहीं है जितनी यह कल्पना कि सबका स्रष्टा एक है, अन्नदाता एक है, स्वामी एक है और उपास्य एक है, अतः सब उसके बन्दे और दास हैं। यह सम्पर्क एक इन्सान को दूसरे से सुपरिचित बनाता और निकट लाता है। इसलिए ईश्वरीय फरमान है कि 'तुम सब ईश्वर की रस्सी से सम्बद्ध हो जाओ और अलग–थलग न हो।''

सिफ़ाते सुबूतिया और सिफ़ाते सलबिया

(सकारात्मक विशेषताएँ और नकारात्मक विशेषताएं)

अल्लाह नाम है स्वयंभू का, जो अपने अस्तित्व में किसी का मोहताज नहीं है वह सरासर अस्तित्व है। उसकी ज़ात (हस्ती) और अस्तित्व में कोई अन्तर नहीं अद्म (अनस्तित्व) का उसकी ज़ात में गुज़र नहीं। इसका अनिवार्य परिणाम यह है कि वह सरासर पूर्णतः है। उसमें कमी नाम है अद्म यअ्नी अनस्तित्व का और परिशुद्ध व परिपूर्ण अस्तित्व में अद्म की गुन्जाइश नहीं। उदाहरणतः अज्ञान कमी और दोष है। अज्ञान

क्या है? ज्ञान का न होना। कमज़ोरी क्या है? शक्ति और बल का न होना। जुल्म क्या है? न्याय का न होना। तो जब अल्लाह की ज़ात परिशुद्ध अस्तित्व है। उसमें न होने की गुन्जाईश ही नहीं उसमें कोई कमी भी नहीं पायी जा सकती और परिपूर्णता की प्रत्येक विशेषता मौजूद है। यह विशेषताएँ जो इसमें पायी जाती हैं ''सिफ़ाते सुबूतिया'' अर्थात सकारात्मक विशेषताएँ या गुण कही जाती हैं। यह आठ हैं:–

1– ''क़दीम'' अर्थात आदि,
2– ''क़ादिर'' अर्थात सर्व शक्तिमान,
3– ''आलिम'' अर्थात सर्वज्ञाता,
4– ''हयि'' अर्थात जीवित,
5– ''मुरीद'' अर्थात इरादे अथवा संकल्प वाला,
6– ''मुदरिक'' अर्थात अनुभूतिकारी,
7– ''मुतकल्लिम'' अर्थात वक्ता,
8– ''सादिक़'' अर्थात सत्यवक्ता

सिफ़ाते सलबिया अर्थात नकारात्मक विशेषताएं या गुण भी आठ हैं:–

1– उसका कोई ''शरीक'' नहीं,
2– ''मुरक्कब'' अर्थात यौगिक नहीं,
3– ''मुतहैयिज़'' नहीं अर्थात स्थान का मुहताज नहीं, क्योंकि साकार नहीं,
4– ''हुलूल'' दुरुस्त नहीं अर्थात अंतः प्रवेशन ठीक नहीं,
5– ''महल–ए–हवादिस'' नहीं अर्थात किसी चीज़ से प्रभावित नहीं हो सकता।
6– ''मरई'' नहीं अर्थात दृश्य नहीं,
7– ''मुहताज'' नहीं उसे किसी बात या वस्तु की आवश्यकता नहीं।
8– ''सिफ़ात ज़ायद बर ज़ात नहीं'' अर्थात उसकी विशेषताएँ या गुण उसके अस्तित्व के अतिरिक्त नहीं।

सिफ़ाते सुबूतिया

1– ''क़दीम'' (आदि) से हैः– प्रत्येक वस्तु के विषय में यह सोचा जा सकता है कि वह कब से है। परन्तु अल्लाह के सम्बन्ध में यह सोचना ठीक नहीं कि वह कब से है! क्योंकि अगर यह माना जाए कि वह कभी न था तो प्रश्न होगा कि फिर हुआ कैसे! क्योंकि कोई चीज़ स्वतः अपनी स्रष्टा या रचयिता तो हो ही नहीं सकती जो वस्तु अस्तित्व में है, वही दूसरे को पैदा कर सकती है। अनस्तित्व से कोई चीज़ अस्तित्व में नहीं आ सकती। इस दशा में किसी अन्य को अल्लाह का स्रष्टा मानना होगा। तब तो फिर वास्तव में ख़ुदा वह हुआ जिसने इसको पैदा किया। इसके अलावा ईश्वर परिशुद्ध अस्तित्व है। तो फिर यह कभी सम्भव नहीं कि वह अस्तित्वहीन हो जाए।

2– ''क़ादिर'' (सर्वशक्तिमान) हैः– कोई भी चीज़ उसकी शक्ति से बाहर नहीं। जैसा कि कुर्आन मजीद में बार–बार कहा गया है कि अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर अधिकार रखता है और कोई चीज़ भी उसकी शक्ति से बाहर नहीं है। जैसा कि कहा जा चुका है कि असमर्थ होना शक्तिहीनता का नाम है ईश्वर की ज़ात में अनस्तित्व की कल्पना नहीं। अतः यह कहना ठीक नहीं कि अमुक बात से अल्लाह असमर्थ है।

कुछ लोग विचार करते हैं कि असम्भव बातों की अल्लाह शक्ति नहीं रखता। इसका उत्तर यह है कि किसी चीज़ को अस्तित्व में लाने हेतु केवल कारक में शक्ति होना ही नहीं पर्याप्त है बल्कि उस वस्तु में भी अस्तित्व ग्रहण करने की क्षमता होना चाहिए। चूँकि असम्भव बातों में अस्तित्व ग्रहण करने की क्षमता ही नहीं। अतः ईश्वर की शक्ति का इनसे सम्बन्ध नहीं हो सकता। **(जारी)**